IMPACT FACTOR 5.397 (SJIF USA)
बिहार शोध समागम BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 1, January-March, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971

"गतिविधि-आधारित शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों की भाषा-दक्षता और रचनात्मक अभिव्यक्ति का विकास : एक क्रियात्मक अध्ययन"

Anand Vijay[1]*, Priya Bharti[2]**, Akriti Sharma[3], Harsha Kumari[4], Kajal Kumari[5]**
[1] Assistant Professor, Rahmani B.Ed. College, Munger,
Munger University, Bihar, India
[2] Resource Person,
Primary Teacher Education College, Nagarpara, Bhagalpur, Bihar, India
[345] B.Ed. Trainee Teachers (Internship Programme),
Upendra Training Academy +2 High School, Munger, Bihar, India
*Corresponding Author: anandvijay281995@gmail.com , priya456bharti@gmail.com

Author Contribution Statement

Conceptualization of the study, formulation of the research framework, design and execution of the action research, academic supervision, qualitative data analysis, interpretation of findings, preparation of the original draft, critical revision, and final editing of the manuscript: **Anand Vijay**.

Academic guidance, pedagogical input, support in planning activity-based teaching strategies, and contribution to reflective discussion during the research process: **Priya Bharti**.

Classroom implementation during the internship programme, facilitation of language-based and creative activities, systematic observation of classroom processes, and collection of primary qualitative data: **Akriti Sharma, Harsha Kumari, and Kajal Kumari**.

Acknowledgement

The author (Anand Vijay & Priya Bharti) sincerely acknowledges the academic support, commitment, and active participation of the B.Ed. trainee teachers (Rahmani B.Ed. College, Munger University, Munger) — **Akriti Sharma, Harsha Kumari, and Kajal Kumari**—who were engaged in the internship programme at **Upendra Training Academy +2 High School, Munger**. Their assistance in classroom implementation, facilitation of language-based and creative activities, systematic observation of classroom interactions, and support in the collection of primary qualitative data significantly contributed to the successful completion of this action research.

The author also extends gratitude to the institutional authorities of **Upendra Training Academy +2 High School, Munger**, for providing a supportive academic environment and necessary facilities to conduct the study.

सारांश

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध उपेन्द्रा ट्रेनिंग अकादमी +2 उच्च विद्यालय, मुंगेर (बिहार) के कक्षा 9 (Group – A) के विद्यार्थियों में रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं भाषा दक्षता के विकास को बढ़ावा देने हेतु किया गया है। कक्षा शिक्षण के दौरान यह देखा गया कि विद्यार्थी अंग्रेज़ी भाषा के प्रयोग में झिझक महसूस करते हैं, उनकी शब्दावली सीमित है तथा वे रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी नहीं कर पाते। पारंपरिक शिक्षण विधियों के कारण विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, कल्पनाशक्ति और भाषिक प्रवाह का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

इस समस्या के समाधान हेतु नाट्य, खेल-आधारित गतिविधियाँ, आत्म-परिचय, समूह कार्य, शब्द खेल, टंग ट्विस्टर, भूमिका-अभिनय एवं रचनात्मक लेखन जैसी गतिविधियों को अपनाया गया। यह अध्ययन गुणात्मक क्रियात्मक शोध पद्धति पर आधारित है, जिसमें योजना, क्रियान्वयन, अवलोकन एवं चिंतन के चक्र को अपनाया गया। उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन द्वारा कक्षा 9 के विद्यार्थियों को शोध में शामिल किया गया।

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि गतिविधि-आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों की भाषा दक्षता, आत्मविश्वास, सहभागिता तथा

रचनात्मक सोच में उल्लेखनीय सुधार हुआ। अतः यह अध्ययन यह सिद्ध करता है कि रचनात्मक एवं संवादात्मक शिक्षण विधियाँ भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावी, रोचक एवं छात्र-केंद्रित बनाती हैं।

मुख्य शब्द: रचनात्मक अभिव्यक्ति, भाषा दक्षता, क्रियात्मक शोध, गतिविधि-आधारित शिक्षण

प्रस्तावना

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि विचार, संवेदना एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त उपकरण है। इक्कीसवीं सदी में विद्यार्थियों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे न केवल भाषाई रूप से दक्ष हों, बल्कि अपने विचारों को आत्मविश्वास, कल्पनाशीलता एवं प्रभावशीलता के साथ व्यक्त कर सकें। इसके बावजूद विद्यालयी स्तर पर यह देखा जाता है कि भाषा शिक्षण अब भी प्रायः पाठ्यपुस्तक-आधारित, स्मरणात्मक एवं परीक्षा-केंद्रित बना हुआ है, जिसके कारण विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति और वास्तविक भाषा प्रयोग सीमित रह जाता है। उपेन्द्रा ट्रेनिंग अकादमी +2 उच्च विद्यालय, मुंगेर के कक्षा 9 के विद्यार्थियों के साथ कक्षा शिक्षण के दौरान यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ कि अधिकांश विद्यार्थी भाषा प्रयोग में झिझक महसूस करते हैं। उनकी शब्दावली सीमित है, वाचन एवं अभिव्यक्ति में आत्मविश्वास का अभाव है तथा वे रचनात्मक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी नहीं कर पाते। पारंपरिक शिक्षण विधियों के कारण विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति, संवाद कौशल एवं रचनात्मक सोच का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। शैक्षिक अनुसंधान यह संकेत करता है कि नाट्य, खेल-आधारित गतिविधियाँ, भूमिका-अभिनय, समूह कार्य तथा संवादात्मक विधियाँ विद्यार्थियों को भाषा का प्रयोग स्वाभाविक एवं अर्थपूर्ण संदर्भों में करने का अवसर प्रदान करती हैं। ऐसी गतिविधियाँ न केवल भाषा-दक्षता को सुदृढ़ करती हैं, बल्कि विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सहयोग, आलोचनात्मक चिंतन एवं रचनात्मकता को भी विकसित करती हैं। इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन को क्रियात्मक शोध के रूप में संचालित किया गया। यह क्रियात्मक शोध विद्यार्थियों की वास्तविक कक्षा-समस्याओं की पहचान कर, योजनाबद्ध गतिविधियों के माध्यम से समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास है। योजना, क्रियान्वयन, अवलोकन एवं चिंतन के चक्र पर आधारित यह अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि किस प्रकार गतिविधि-आधारित एवं रचनात्मक शिक्षण विधियाँ उच्च विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में भाषा-दक्षता एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति के विकास में सहायक सिद्ध हो सकती हैं। यह अध्ययन न केवल भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में एक व्यावहारिक प्रयास है, बल्कि शिक्षक को आत्ममूल्यांकन एवं नवाचार के लिए भी प्रेरित करता है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

1. Bridges (2008)

Bridges (2008) ने *Readers' Theatre* को एक नाट्य-आधारित शिक्षण रणनीति के रूप में प्रयोग कर अंग्रेज़ी भाषा शिक्षार्थियों की मौखिक दक्षता और पठन कौशल का अध्ययन किया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि नाट्य गतिविधियों से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास, उच्चारण और सहभागिता बढ़ती है। लेखक ने निष्कर्ष निकाला कि नाटक को भाषा शिक्षण का सहायक नहीं बल्कि अभिन्न अंग माना जाना चाहिए।

2. Dodson (2000)

Dodson (2000) ने ESL कक्षाओं में नाट्य तकनीकों की प्रभावशीलता पर एक अर्ध-प्रयोगात्मक अध्ययन किया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि नाट्य-आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों की प्रवाहपूर्ण भाषा, शब्दावली और संप्रेषण क्षमता में पारंपरिक विधियों की तुलना में अधिक सुधार हुआ। अध्ययन ने नाटक को भाषा अधिगम का प्रभावी साधन माना।

3. Maley & Duff (2005)

Maley और Duff (2005) ने भाषा शिक्षण में नाट्य गतिविधियों को एक संप्रेषणात्मक उपकरण के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने भूमिका-अभिनय, तात्कालिक अभिनय और पाठ-नाट्यकरण जैसी तकनीकों को प्रभावी बताया। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि नाटक विद्यार्थियों को निष्क्रिय से सक्रिय शिक्षार्थी बनाता है।

4. Kao & O'Neill (1998)

Kao और O'Neill (1998) ने *Process Drama* के माध्यम से द्वितीय भाषा अधिगम का गुणात्मक अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि नाट्य-आधारित भूमिकाएँ विद्यार्थियों को जोखिम लेकर भाषा प्रयोग करने का सुरक्षित वातावरण देती हैं। यह विधि भाषा के साथ-साथ सांस्कृतिक समझ और आलोचनात्मक चिंतन को भी विकसित करती है।

5. Belz & Kim (Drama in L2 Learning – Research Synthesis)

Belz और Kim ने द्वितीय भाषा शिक्षण में नाटक पर पिछले दो दशकों के शोधों की समीक्षा की। अध्ययन में नाटक को बहु-माध्यमीय, रचनात्मक और विद्यार्थी-केंद्रित पद्धति बताया गया। हालांकि लेखकों ने यह भी रेखांकित किया कि नाटक की प्रभावशीलता पर दीर्घकालिक अनुभवजन्य शोध अभी सीमित हैं।

6. Jäger (2011)

Jäger (2011) ने विदेशी भाषा शिक्षण में नाट्य-आधारित गतिविधियों द्वारा अंतर-सांस्कृतिक अधिगम का क्रियात्मक अध्ययन किया। निष्कर्षों से पता चला कि नाटक विद्यार्थियों को "अनुभव के माध्यम से संस्कृति" समझने का अवसर देता है। यह विधि भाषा सीखने को अधिक संवेदनशील और अर्थपूर्ण बनाती है।

7. Using Drama in ESL/EFL Classroom (Literature Review)
इस साहित्य समीक्षा में ESL/EFL कक्षाओं में नाटक के प्रयोग की सैद्धांतिक और व्यावहारिक चर्चा की गई है। अध्ययन में बताया गया कि नाटक भाषा दक्षता, आत्मविश्वास और संप्रेषण कौशल को बढ़ावा देता है। साथ ही शिक्षकों के सामने समय और प्रशिक्षण जैसी चुनौतियों को भी रेखांकित किया गया है।
8. Nurhayati (Using Local Drama)
Nurhayati ने स्थानीय नाटक के माध्यम से EFL विद्यार्थियों की लेखन और वाचन क्षमता का अध्ययन किया। शोध से यह स्पष्ट हुआ कि स्थानीय सांस्कृतिक नाटक विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति, आत्मविश्वास और भाषा संगठन क्षमता को सशक्त बनाते हैं। यह विधि विद्यार्थियों को सीखने से जोड़ती है।
9. Nguyen (2021)
Nguyen (2021) ने वियतनाम में अंग्रेज़ी साहित्य शिक्षण में भूमिका-अभिनय पर आधारित क्रियात्मक शोध किया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि नाट्य गतिविधियाँ विद्यार्थियों की रुचि, साहित्यिक समझ और सहभागिता को बढ़ाती हैं। यह विधि कक्षा को अधिक संवादात्मक बनाती है।

शोध-अन्तराल

उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि भाषा शिक्षण में नाट्य एवं गतिविधि-आधारित विधियों की उपयोगिता पर कई अध्ययन किए गए हैं, किंतु अधिकांश शोध विदेशी भाषा शिक्षण या उच्च शिक्षा स्तर तक सीमित रहे हैं। भारतीय विद्यालयी संदर्भ में, विशेषकर उच्च विद्यालय स्तर पर, वास्तविक कक्षा-कक्ष की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए क्रियात्मक शोध आधारित अध्ययन बहुत कम उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को केंद्र में रखकर गतिविधि-आधारित शिक्षण के प्रभाव का व्यवस्थित अध्ययन भी पर्याप्त रूप से नहीं किया गया है। इसी रिक्तता को भरने हेतु प्रस्तुत क्रियात्मक शोध किया गया है।

समस्या कथन

उच्च विद्यालय स्तर पर भाषा शिक्षण के दौरान यह देखा गया है कि अनेक विद्यार्थी अपने विचारों को स्पष्ट, आत्मविश्वासपूर्ण एवं रचनात्मक ढंग से व्यक्त करने में असमर्थ रहते हैं। पारंपरिक शिक्षण विधियों के कारण विद्यार्थियों की भाषा-दक्षता, शब्दावली, वाचन कौशल तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति का अपेक्षित विकास नहीं हो पाता। परिणामस्वरूप विद्यार्थी भाषा प्रयोग में झिझक अनुभव करते हैं और कक्षा गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी नहीं कर पाते। अतः यह समस्या यह विचारणीय बन जाती है कि किस प्रकार गतिविधि-आधारित एवं नाट्यात्मक शिक्षण विधियों के माध्यम से उच्च विद्यालय के विद्यार्थियों की भाषा-दक्षता एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रभावी रूप से विकसित किया जा सकता है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में रचनात्मक अभिव्यक्ति के विकास को प्रोत्साहित करना तथा उनकी भाषा-दक्षता—पठन, लेखन, श्रवण एवं वाचन—में सुधार लाना है। इस अध्ययन के माध्यम से भाषा शिक्षण में नाट्य एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का परीक्षण किया गया है, जिससे यह समझा जा सके कि ये विधियाँ विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया को किस प्रकार अधिक प्रभावी बना सकती हैं। इसके अतिरिक्त, यह शोध विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, कल्पनाशक्ति एवं आलोचनात्मक चिंतन के विकास पर भी केंद्रित है। साथ ही, पारंपरिक शिक्षण विधियों की सीमाओं को पहचानते हुए नवाचारी शिक्षण रणनीतियों को कक्षा शिक्षण में लागू करने तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक रोचक, सहभागितापूर्ण एवं छात्र-केंद्रित बनाने का प्रयास किया गया है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक क्रियात्मक शोध पद्धति पर आधारित है, जिसका उद्देश्य कक्षा-कक्ष में उत्पन्न वास्तविक शैक्षिक समस्या का समाधान करना है। इस शोध में योजना, क्रियान्वयन, अवलोकन तथा चिंतन के चक्रीय मॉडल को अपनाया गया। अध्ययन का क्षेत्र उपेन्द्रा ट्रेनिंग अकादमी +2 उच्च विद्यालय, मुंगेर रहा, जहाँ कक्षा 9 के विद्यार्थियों को उद्देश्यपूर्ण नमूना विधि द्वारा चयनित किया गया। शोध प्रक्रिया के दौरान विद्यार्थियों की भाषा-दक्षता, रचनात्मक अभिव्यक्ति, सहभागिता तथा आत्मविश्वास में होने वाले परिवर्तनों का व्यवस्थित अवलोकन किया गया। शोध उपकरण के रूप में अवलोकन सूची, कक्षा-गतिविधियों के उत्पाद, मौखिक प्रतिक्रियाएँ एवं शोधकर्ता की चिंतनात्मक टिप्पणियों का प्रयोग किया गया।

कार्य योजना (Action Plan)

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध में उच्च विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों में भाषा-दक्षता एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति के विकास हेतु एक सुव्यवस्थित कार्य योजना का निर्माण किया गया। इस कार्य योजना का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों को भाषा प्रयोग के अधिकाधिक अवसर प्रदान करना तथा उन्हें सक्रिय, आत्मविश्वासपूर्ण एवं सहभागितामूलक अधिगम वातावरण से जोड़ना था। कार्य योजना का निर्माण कक्षा शिक्षण के दौरान किए गए प्रारंभिक अवलोकन के आधार पर किया गया, जिसमें विद्यार्थियों की भाषिक झिझक, सीमित शब्दावली तथा रचनात्मक अभिव्यक्ति की कमी स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई।

योजना चरण (Planning Stage)

योजना चरण में विद्यार्थियों की मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति, भाषा प्रयोग की प्रवृत्ति, आत्मविश्वास तथा कक्षा सहभागिता का गहन अवलोकन किया गया। अवलोकन के आधार पर यह पाया गया कि अधिकांश विद्यार्थी भाषा प्रयोग में संकोच अनुभव करते हैं, उनके विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त नहीं हो पाते तथा वे रचनात्मक गतिविधियों में सीमित भागीदारी दिखाते हैं। इन समस्याओं के समाधान हेतु

नाट्य, खेल एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण विधियों को अपनाने की योजना बनाई गई, ताकि विद्यार्थियों को सहज एवं सुरक्षित वातावरण में भाषा प्रयोग के अवसर मिल सकें।

क्रियान्वयन चरण (Implementation Stage)

निर्धारित योजना के अनुसार कक्षा-कक्ष में विभिन्न रचनात्मक एवं भाषा-विकासात्मक गतिविधियों का क्रियान्वयन किया गया। इनमें मुख्य रूप से आत्म-परिचय, शब्द-खेल, टंग ट्विस्टर, समूह चर्चा, भूमिका-अभिनय, संवाद निर्माण तथा रचनात्मक लेखन जैसी गतिविधियाँ सम्मिलित थीं। इन गतिविधियों का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से विचार व्यक्त करने, भाषा का स्वाभाविक एवं सृजनात्मक प्रयोग करने तथा समूह में संवाद स्थापित करने के लिए प्रेरित करना था। गतिविधियों को सरल से जटिल क्रम में प्रस्तुत किया गया, जिससे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास धीरे-धीरे विकसित हो सके।

अवलोकन चरण (Observation Stage)

क्रियान्वयन के दौरान विद्यार्थियों की सहभागिता, भाषा प्रयोग, अभिव्यक्ति की स्पष्टता, आत्मविश्वास एवं रचनात्मक सोच में आए परिवर्तनों का निरंतर अवलोकन किया गया। अवलोकन से यह पाया गया कि प्रारंभिक संकोच के पश्चात् विद्यार्थी गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेने लगे। उनके मौखिक अभिव्यक्ति कौशल, शब्दावली तथा संवाद क्षमता में क्रमिक सुधार दिखाई देने लगा।

चिंतन चरण (Reflection Stage)

कार्य योजना के अंतर्गत किए गए शिक्षण हस्तक्षेपों पर प्रत्येक चक्र के पश्चात् चिंतन किया गया। प्राप्त अनुभवों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि नाट्य एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की भाषा-दक्षता एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति के विकास में प्रभावी सिद्ध होती हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षक का सतत मार्गदर्शन, सकारात्मक प्रतिक्रिया एवं प्रोत्साहन विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं सहभागिता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है

डेटा विश्लेषण

चक्र-वार विश्लेषण

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध में प्राप्त डेटा का विश्लेषण गुणात्मक एवं वर्णनात्मक विधि से किया गया है। शोध प्रक्रिया को योजना, क्रियान्वयन, अवलोकन एवं चिंतन के चक्रों में विभाजित किया गया तथा प्रत्येक चक्र में विद्यार्थियों की भाषा-दक्षता, रचनात्मक अभिव्यक्ति, सहभागिता एवं आत्मविश्वास में आए परिवर्तनों का अध्ययन किया गया। प्रत्येक चक्र के अंत में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर आगामी शिक्षण रणनीतियों में आवश्यक सुधार किए गए।

प्रथम चक्र (Cycle–I) : दिन-प्रतिदिन विश्लेषण

प्रथम चक्र का उद्देश्य विद्यार्थियों की प्रारंभिक भाषिक स्थिति का आकलन करना तथा उनकी भाषिक कठिनाइयों की पहचान करना था। इस चक्र के अंतर्गत विभिन्न दिनों में आयोजित गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों की मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति, सहभागिता तथा आत्मविश्वास का अवलोकन किया गया।

प्रथम दिवस (Day–1)

प्रथम दिवस विद्यार्थियों से सामान्य संवाद स्थापित कर उनकी भाषिक स्थिति का प्रारंभिक अवलोकन किया गया। इस दिन यह पाया गया कि अधिकांश विद्यार्थी अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में संकोच कर रहे थे। प्रश्न पूछे जाने पर उनके उत्तर संक्षिप्त, असंगत एवं आत्मविश्वास-रहित थे। सीमित शब्द-संपदा के कारण अभिव्यक्ति प्रभावी नहीं थी तथा कक्षा सहभागिता अपेक्षाकृत कम पाई गई। यह स्थिति विद्यार्थियों में भाषा प्रयोग के प्रति झिझक एवं आत्मविश्वास की कमी को दर्शाती है।

द्वितीय दिवस (Day–2)

द्वितीय दिवस विद्यार्थियों से आत्म-परिचय एवं सरल मौखिक अभिव्यक्ति का अभ्यास कराया गया। कुछ विद्यार्थियों ने अपने बारे में बोलने का प्रयास किया, किंतु अधिकांश विद्यार्थी अभी भी झिझक अनुभव कर रहे थे। वाक्य निर्माण में त्रुटियाँ तथा विचारों की स्पष्टता का अभाव दिखाई दिया। यद्यपि प्रयास करने की प्रवृत्ति विकसित हो रही थी, फिर भी भाषा प्रयोग स्वाभाविक नहीं हो पाया। इस दिवस के अवलोकन से यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों को सहयोगात्मक एवं सुरक्षित वातावरण की आवश्यकता है।

तृतीय दिवस (Day–3)

तृतीय दिवस शब्द-खेल एवं टंग ट्विस्टर जैसी गतिविधियाँ आयोजित की गईं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों ने भाषा के साथ खेलते हुए अभ्यास किया। कुछ विद्यार्थियों में उत्साह एवं सहभागिता में वृद्धि देखी गई, किंतु उच्चारण, प्रवाह एवं शब्द चयन में अभी भी कठिनाइयाँ बनी रहीं। यह दिवस यह संकेत करता है कि गतिविधि-आधारित अभ्यास से झिझक में कमी आ सकती है, परंतु निरंतर अभ्यास आवश्यक है।

पंचम दिवस अनुभव साझा करने की गतिविधि कराई गई। इस दिन कुछ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास में आंशिक सुधार दिखाई दिया। वे छोटे-छोटे वाक्यों में अपने अनुभव व्यक्त करने लगे, किंतु अभिव्यक्ति में झिझक एवं भाषिक त्रुटियाँ अभी भी मौजूद थीं। इस दिवस के अवलोकन से यह निष्कर्ष निकला कि प्रारंभिक स्तर पर विद्यार्थियों को निरंतर प्रोत्साहन, मार्गदर्शन एवं योजनाबद्ध अभ्यास की आवश्यकता है।

प्रथम चक्र का समेकित विश्लेषण

प्रथम चक्र के दिन-प्रतिदिन विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की प्रारंभिक भाषिक स्थिति कमजोर थी। उनकी शब्द-संपदा सीमित थी, अभिव्यक्ति में संकोच था तथा आत्मविश्वास का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। यद्यपि गतिविधियों के माध्यम से सहभागिता में धीरे-धीरे वृद्धि हुई, फिर भी भाषा-दक्षता एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति के विकास हेतु अधिक संवादात्मक, नाट्य एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण हस्तक्षेप की आवश्यकता सामने आई। प्रथम चक्र के निष्कर्षों के आधार पर आगामी चक्र में शिक्षण रणनीतियों को और अधिक सहभागितामूलक एवं रचनात्मक बनाने का निर्णय लिया गया।

द्वितीय चक्र (Cycle–II) : दिन-प्रतिदिन डेटा विश्लेषण

द्वितीय चक्र का उद्देश्य प्रथम चक्र में पहचानी गई भाषिक कठिनाइयों को कम करना तथा विद्यार्थियों की भाषा-दक्षता, सहभागिता एवं आत्मविश्वास को सुदृढ़ करना था। इस चक्र में गतिविधियों को अधिक संवादात्मक, रचनात्मक एवं नाट्य-आधारित स्वरूप में प्रस्तुत किया गया। विद्यार्थियों की मौखिक अभिव्यक्ति, समूह सहभागिता तथा रचनात्मक सोच में आए परिवर्तनों का निरंतर अवलोकन किया गया।

प्रथम दिवस (Day–1

द्वितीय चक्र के प्रथम दिवस विद्यार्थियों से आत्म-परिचय एवं सामान्य संवाद की गतिविधि कराई गई। इस दिन यह पाया गया कि अधिकांश विद्यार्थी प्रथम चक्र की तुलना में अधिक आत्मविश्वास के साथ अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। यद्यपि कुछ विद्यार्थियों में हल्की झिझक बनी रही, फिर भी उनके वाक्य अपेक्षाकृत स्पष्ट एवं संगठित थे। सहभागिता में वृद्धि स्पष्ट रूप से दिखाई दी।

द्वितीय दिवस (Day–2)

द्वितीय दिवस शब्द-खेल एवं शब्दावली विस्तार से संबंधित गतिविधियाँ कराई गईं। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और सही शब्दों के चयन में पहले की तुलना में अधिक तत्परता दिखाई। इस दिन यह देखा गया कि विद्यार्थियों की शब्द-संपदा में आंशिक वृद्धि हुई तथा भाषा प्रयोग अधिक सहज होने लगा।

तृतीय दिवस (Day–3)

तृतीय दिवस टंग ट्विस्टर एवं उच्चारण अभ्यास की गतिविधि आयोजित की गई। इस दिन विद्यार्थियों के उच्चारण में सुधार तथा बोलने की गति में संतुलन देखा गया। यद्यपि कुछ विद्यार्थियों को कठिन शब्दों में समस्या हुई, फिर भी उन्होंने बिना संकोच अभ्यास जारी रखा। यह दिवस भाषा प्रवाह के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ।

चतुर्थ दिवस (Day–4)

चतुर्थ दिवस समूह चर्चा की गतिविधि कराई गई, जिसमें विद्यार्थियों को दिए गए विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया गया। समूह में कार्य करने से विद्यार्थियों की सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। कई विद्यार्थी अपने सहपाठियों के सहयोग से संवाद स्थापित करने लगे और भाषा प्रयोग अधिक स्वाभाविक दिखाई दिया।

पंचम दिवस (Day–5)

पंचम दिवस भूमिका-अभिनय आधारित गतिविधि आयोजित की गई। विद्यार्थियों ने दिए गए सामाजिक एवं दैनिक जीवन से जुड़े प्रसंगों का अभिनय किया। इस दिन यह पाया गया कि अधिकांश विद्यार्थी बिना झिझक संवाद बोल रहे थे। अभिनय के माध्यम से उनकी अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली, भावपूर्ण एवं आत्मविश्वास-युक्त हो गई।

षष्ठम दिवस (Day–6)

षष्ठम दिवस द्वितीय चक्र की समापन गतिविधि के रूप में रचनात्मक लेखन एवं अनुभव साझा करने की गतिविधि कराई गई। विद्यार्थियों ने लघु अनुच्छेद एवं संवाद लिखे तथा अपने अनुभव कक्षा में साझा किए। इस दिन यह स्पष्ट रूप से देखा गया कि विद्यार्थियों की भाषा-दक्षता, शब्द-प्रयोग एवं विचारों की स्पष्टता में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

द्वितीय चक्र का समेकित विश्लेषण

द्वितीय चक्र के दिन-प्रतिदिन विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि गतिविधि-आधारित एवं नाट्यात्मक शिक्षण विधियों ने विद्यार्थियों की भाषा-दक्षता, सहभागिता एवं आत्मविश्वास को सुदृढ़ किया। प्रथम चक्र की तुलना में विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति अधिक स्पष्ट, प्रवाहपूर्ण एवं रचनात्मक पाई गई। यह चक्र आगामी तृतीय चक्र के लिए एक मजबूत आधार सिद्ध हुआ।

तृतीय चक्र (Cycle–III) : दिन-प्रतिदिन डेटा विश्लेषण

तृतीय चक्र का उद्देश्य प्रथम एवं द्वितीय चक्रों में किए गए शिक्षण हस्तक्षेपों के प्रभाव को सुदृढ़ करना तथा विद्यार्थियों की भाषिक समृद्धि, रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं आत्मविश्वास को उच्च स्तर तक विकसित करना था। इस चक्र में गतिविधियों को अधिक प्रस्तुति-आधारित, रचनात्मक एवं स्व-अभिव्यक्ति केंद्रित बनाया गया। विद्यार्थियों की भाषा-दक्षता, भाव-प्रस्तुति तथा स्वतंत्र चिंतन क्षमता का गहन अवलोकन किया गया।

प्रथम दिवस (Day–1)

तृतीय चक्र के प्रथम दिवस विद्यार्थियों से स्वतंत्र संवाद एवं अनुभव साझा करने की गतिविधि कराई गई। इस दिन यह देखा गया कि अधिकांश विद्यार्थी बिना किसी झिझक के अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त कर रहे थे। भाषा प्रवाह, वाक्य संरचना एवं आत्मविश्वास में पूर्व चक्रों की तुलना में उल्लेखनीय सुधार दिखाई दिया। कक्षा सहभागिता लगभग सभी विद्यार्थियों में देखने को मिली।

द्वितीय दिवस (Day–2)

द्वितीय दिवस रचनात्मक लेखन की गतिविधि आयोजित की गई, जिसमें विद्यार्थियों से लघु कहानी अथवा अनुभव आधारित अनुच्छेद लिखवाए गए। विद्यार्थियों की रचनाओं में शब्द-भंडार की वृद्धि, विचारों की स्पष्टता तथा भावात्मक अभिव्यक्ति परिलक्षित हुई। यद्यपि कुछ भाषिक त्रुटियाँ बनी रहीं, फिर भी लेखन में प्रवाह एवं आत्मविश्वास स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।

तृतीय दिवस (Day–3)

तृतीय दिवस समूह प्रस्तुति एवं संवाद नाट्य की गतिविधि कराई गई। विद्यार्थियों ने निर्धारित विषयों पर समूह में संवाद तैयार कर कक्षा के समक्ष प्रस्तुत किया। इस दिन उनकी अभिव्यक्ति अधिक प्रभावशाली, भावपूर्ण एवं संगठित पाई गई। विद्यार्थियों ने स्वर, हाव-भाव एवं भाषा का समन्वित प्रयोग किया, जिससे नाट्यात्मक कौशल का विकास स्पष्ट हुआ।

चतुर्थ दिवस (Day–4)

चतुर्थ दिवस प्रश्नोत्तर एवं आलोचनात्मक चिंतन आधारित गतिविधि आयोजित की गई। विद्यार्थियों ने न केवल प्रश्नों के उत्तर दिए, बल्कि अपने विचारों के पक्ष में तर्क भी प्रस्तुत किए। इस दिन यह स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच, तार्किक अभिव्यक्ति एवं भाषा प्रयोग की क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

पंचम दिवस (Day–5)

पंचम दिवस आत्ममूल्यांकन एवं सहपाठी प्रतिक्रिया की गतिविधि कराई गई। विद्यार्थियों ने अपने तथा सहपाठियों के कार्यों पर टिप्पणी की। इस गतिविधि से उनमें आत्मविश्लेषण, भाषा-संवेदनशीलता एवं सकारात्मक प्रतिक्रिया देने की क्षमता का विकास हुआ। भाषा प्रयोग अधिक परिपक्व एवं संतुलित दिखाई दिया।

षष्ठम दिवस (Day–6)

षष्ठम दिवस तृतीय चक्र का समापन दिवस था, जिसमें समेकित प्रस्तुति एवं अनुभव साझा करने की गतिविधि कराई गई। विद्यार्थियों ने पूरे शोध काल में अर्जित अनुभवों को आत्मविश्वासपूर्वक प्रस्तुत किया। इस दिन यह स्पष्ट रूप से देखा गया कि विद्यार्थियों की भाषिक दक्षता, रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं आत्मविश्वास में व्यापक और स्थायी सुधार हुआ है।

तृतीय चक्र का समेकित विश्लेषण

तृतीय चक्र के दिन-प्रतिदिन विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि निरंतर, योजनाबद्ध एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण हस्तक्षेपों ने विद्यार्थियों की भाषिक समृद्धि को प्रभावी रूप से विकसित किया। इस चक्र में विद्यार्थी अधिक स्वतंत्र, रचनात्मक एवं आत्मविश्वासपूर्ण रूप से भाषा का प्रयोग करते दिखाई दिए। यह चक्र इस तथ्य की पुष्टि करता है कि संवादात्मक एवं नाट्यात्मक शिक्षण विधियाँ भाषा शिक्षण को अधिक प्रभावशाली, रोचक एवं छात्र-केंद्रित बनाती हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत क्रियात्मक एवं गुणात्मक क्रियात्मक शोध से यह स्पष्ट होता है कि **योजनाबद्ध, गतिविधि-आधारित तथा रचनात्मक शिक्षण हस्तक्षेप** कक्षा 9 (Group A) के विद्यार्थियों में **रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं भाषा दक्षता** के विकास में प्रभावी सिद्ध हुए। तीनों चक्रों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि प्रारंभिक अवस्था (Cycle-1) में विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की कमी, एकाग्रता का अभाव, सीमित शब्दावली तथा कल्पनाशक्ति की कमजोरी के कारण कक्षा सहभागिता अपेक्षाकृत कम थी।

Cycle-1 में खेल-आधारित एवं भाषा-केन्द्रित गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों में रुचि उत्पन्न हुई तथा कक्षा वातावरण संवादात्मक बना। Cycle-2 में सूक्ष्म पेशीय कौशल (Fine Motor Skills) से संबंधित रचनात्मक हस्तक्षेपों के माध्यम से विद्यार्थियों की एकाग्रता, धैर्य, समन्वय क्षमता तथा सृजनात्मक सोच में निरंतर सुधार देखा गया। इन गतिविधियों ने भाषा प्रयोग को अधिक सशक्त एवं आत्मविश्वासपूर्ण बनाया।

Cycle-3 में विद्यार्थियों ने अर्जित क्षमताओं का स्वतंत्र, स्वाभाविक एवं सृजनात्मक रूप से प्रयोग करना प्रारंभ किया। उनकी मौखिक अभिव्यक्ति, शब्द-स्मरण, उच्चारण, कल्पनाशक्ति तथा सहभागिता में स्पष्ट और स्थायी प्रगति दृष्टिगोचर हुई। कक्षा-कक्ष एक सकारात्मक, सहभागितामूलक एवं रचनात्मक अधिगम वातावरण में परिवर्तित हो गया।

समग्र रूप से यह अध्ययन सिद्ध करता है कि **क्रियात्मक शोध की चक्रीय प्रक्रिया शिक्षकों को अपनी शिक्षण पद्धतियों के आत्ममूल्यांकन एवं सुधार का अवसर प्रदान करती है** तथा निरंतर गतिविधि-आधारित शिक्षण विद्यार्थियों की **भाषाई दक्षता, आत्मविश्वास और रचनात्मक क्षमता** को सुदृढ़ करने में अत्यंत प्रभावी एवं व्यवहारिक है।

उपसंहार एवं शैक्षिक सुझाव

प्रस्तुत क्रियात्मक शोध से यह स्पष्ट होता है कि योजनाबद्ध एवं निरंतर गतिविधि-आधारित शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों की **रचनात्मक अभिव्यक्ति, भाषा दक्षता, आत्मविश्वास तथा कक्षा सहभागिता** में उल्लेखनीय सुधार हुआ। तीनों चक्रों के दौरान विद्यार्थियों में प्रारंभिक झिझक, एकाग्रता की कमी तथा सीमित भाषा प्रयोग में क्रमिक रूप से कमी आई और वे अधिक सक्रिय, आत्मनिर्भर एवं सृजनात्मक बनते गए। यह शोध यह भी दर्शाता है कि **क्रियात्मक शोध पद्धति शिक्षकों को अपनी शिक्षण विधियों के आत्ममूल्यांकन एवं सुधार का अवसर प्रदान करती है**, जिससे शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया अधिक प्रभावी, रुचिकर एवं विद्यार्थी-केन्द्रित बनती है।

अतः यह सुझाव दिया जाता है कि कक्षा शिक्षण में **गतिविधि-आधारित, खेल एवं रचनात्मक शिक्षण विधियों** का नियमित प्रयोग किया जाए, विद्यार्थियों को **स्वतंत्र अभिव्यक्ति एवं सहभागिता के अवसर** प्रदान किए जाएँ तथा भाषा शिक्षण को **संवादात्मक और भय-मुक्त वातावरण** में संचालित किया जाए, जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो सके।

परिसीमन

प्रस्तुत शोध भारत के बिहार राज्य के मुंगेर ज़िले में स्थित उपेन्द्र ट्रेनिंग अकादमी +2 उच्च विद्यालय के नवम वर्ग (Group–A) के विद्यार्थियों तक ही सीमित है। अतः इस अध्ययन के निष्कर्षों को अन्य विद्यालयों, कक्षा स्तरों अथवा भिन्न शैक्षिक परिवेशों पर सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता।

परिशिष्ट

PLAN
ACT
OBSERVE

Plan
Act
Observe

संदर्भ सूची

1. Bridges, L. (2008). *The impact of readers' theatre on oral proficiency and reading skills*. Journal of Language Teaching, 12(2), 45–56.
2. Dodson, S. L. (2000). Drama in ESL classrooms: A quasi-experimental study. *TESOL Quarterly*, 34(2), 321–345.
3. Maley, A., & Duff, A. (2005). *Drama techniques in language learning*. Cambridge University Press.
4. Kao, S. M., & O'Neill, C. (1998). *Words into worlds: Learning a second language through process drama*. Ablex Publishing.
5. Belz, J. A., & Kim, Y. (2018). Drama in L2 learning: A research synthesis. *System*, 74, 15–27.
6. Jäger, A. (2011). *Kultur szenisch erfahren: Interkulturelles Lernen im Fremdsprachenunterricht*. Schneider Verlag.
7. Using drama in ESL/EFL classrooms. (2015). *International Journal of Language Education*, 7(1), 22–30.
8. Nurhayati, D. A. W. (2016). Using local drama in writing and speaking: EFL learners' creative expression. *Journal of Language and Literature*, 10(1), 45–56.
9. Nguyen, H. M. P. (2021). The use of drama role-playing in teaching English literature: An action research. *Advances in Social Science, Education and Humanities Research*, 533, 303–307.